जैविक खेती से धान की उपज बढ़ाने की मेडागास्कर पद्धति

दो से तीन गुनी उपज हो सकती है

मेडागास्कर पद्धति धान की पैदावार बढाने की नई पद्धति है जिसमें कम पानी, कम बीज और बिना रासायनिक खाद के दोगुना से ज्यादा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इस नई पद्धति में धान के खेत में पानी भरकर रखने की जरूरत नहीं है। क्योंकि खेत में पानी भरे रखने से पौधे का संपूर्ण विकास नही होता। अगर खेत में पानी भरा हो तो पौधे की अधिकांश जडे बालियां निकलने से पहले ही सड जाती है और उराकी बढवार कमजार होती है। इरालिए उत्पादन भी कम होता है।

दूसरी तरफ मेडागास्कर पद्धति में खेत में पानी भरकर नहीं रखने से पौधे का जड़ों का समुचित विकास होता है। मिट्टी में पौधे की जड़ें फैलती है। गोबर व कम्पोस्ट खाद से मिट्टी में समाहित जीवांश को जीवाणुओं द्वारा पचाकर पौधों को पोषण उपलब्ध कराते है। इससें ज्यादा कंसा आते हैं ओर ज्यादा उत्पादन होता है।

बीज का चुनाव

- इरा पद्धति में रिर्फ एक एकड़ में 2 किलो ही बीज चाहिए।
- आप अपने क्षेत्र और मिट्टी के हिसाब से उपलब्ध देशी बीज का चुनाव कर सकते है।
- अगर बारिश के पानी के भरोसे खेती करना है तो जल्दी पकनेवाली (हरूना) धान लगाएं यानी 100 से 125 दिन की अवधिवाली किस्म लगाएं।
- अगर सिंचाई की सुविधा है तो देर से पकनेवाली (माई धान 130–150 दिन) किस्म लगा सकते हैं।

बीज का उपचार

- बीज को नमक पानी में उपचारित कर हल्का बीज हटा दें।
- उपचारित बीज को दिनभर ताजा पानी में भिगो दें।
- भीगे हुए बीज को बोरी में बांधकर एक–दो दिन तक अंकुरण के लिए रखें।
- अंकुर फूटते ही नर्सरी में बोएं।

जनहित में प्रकाशित : जन स्वास्थ्य सहयोग, ग्राम : गनियारी - बेलटुकरी, जिला - बिलासपुर, छत्तीसगढ़ पिन न. 495 112, फोन न. 07753-244819

नर्सरी तैयार करने का तरीका

- समतल जगह में गोबर खाद आदि डालकर अच्छे से तैयार कर लें।
- ढाई फीट चौड़ी और 10 फीट लंबी क्यारियां बना लें।
- क्यारी जमीन से 3 –4 इंच ऊंची होनी चाहिए।
- क्यारियों के बीच में पानी निकासी के लिए नाली होना चाहिए।
- क्यारियों को समतल कर अंकुरित बीज को बोएं।
- बीज ज्यादा घना न डालें, दूर–दूर रहें (एक डिसिमल में 2 किलो बीज)
- गोबर खाद की हल्की परत से ढक दें।
- नमी कम होने पर हाथ से पानी सींचें ।

रोपाई

- रोपाई के लिए 10–12 दिन का ही थरहा होना चाहिए।
- पहले गोबर खाद डालकर खेत तैयार कर लें।
- रोपाई के 2 रोज पहले मताई करें और समतल करें।
- एक या दो दिन बाद ही निशान लगाने के लिए पानी निकालें।
- दतारी जैसे औजार से निशान खींचें।
- रोपाई के निशान 10– 10 इंच के अंतर से डालें।
- 8–10 कतार के बाद पानी निकासी के लिए नाली छोड़ दें।
- थरहा से पौधों को सावधानी से मिट्टी के साथ निकालें और खेत में ले जाएं।
- लगाते समय एक–एक पौधे को अलग–अलग करें।
- पौधा अलग करते समय जड़ों के साथ बीज और मिट्टी भी लगी रहे।
- दतारी से बने चौकोर निशान पर एक–एक पौधा रोपें।

जनहित में प्रकाशित : जन स्वास्थ्य सहयोग, ग्राम : गनियारी - बेलटुकरी, जिला - बिलासपुर, छत्तीसगढ़ पिन नं. 495 112, फोन नं. 07753-244819

खाद की व्यवस्था

- इसमें गोबर खाद, कंपोस्ट खाद, हरी खाद आदि का ही प्रयोग करें।
- रासायनिक खाद बिल्कुल भी डालने की जरूरत नही है।
- प्रति एकड़ पका हुआ 6–8 ट्रेक्टर ट्राली गोबर खाद डाल सकते हैं।
- हरी खाद के रूप में सनई या कुलथी (हिरवा) बोकर एक–डेढ माह बाद रोपाई के पहले सड़ा सकते हैं।

पानी का नियोजन

- खेत में पानी भर जाने पर निकासी करें।
- सिर्फ औजार से निंदाई के समय ही 2–3 दिन के लिए पानी खेत में भरकर रखें।
- बाली निकलने से दाना भरने तक खेत में अंगुल भर पानी भरकर रख सकते है।
- पानी निकासी के लिए नाली बनाना जरूरी है।
- पानी निकालकर बाजू के खेत या डबरी में रख सकते है जिससे जरूरत पड़ने पर सिंचाई की जा सके।

जनहित में प्रकाशित : जन स्वास्थ्य सहयोग, ग्राम : गनियारी - बेलटुकरी, जिला - बिलासपुर, छत्तीसगढ़ पिन न. 495 112, फोन न. 07753-244819

खरपतवार नियंत्रण

- खेत में पानी भराव न होने से खरपतवार जल्द उग आती है।
- रोपाई के बाद 10–11 दिन में कतार के बीच में वीडर (औजार) चलाएं।
- रोपाई के 25–30 रोज के बीच में दूसरी बार वीडर चलाएं।
- वीडर चलाने के लिए खेत में पानी का भराव जरूरी है इसलिए 2 रोज पहले से पानी रोकें।
- वीडर चलाने के बाद एक–दो दिन में पानी निकासी करें।
- पौधे की बढ़वार कम होने पर तीसरी बार वीडर चलाएं।
- आखिरी बार बचे हुए खरपतवार की हाथ से निंदाई करें।

सीधा बीज बोकर भी मेडागास्कर पद्धति से धान खेती कर सकते है

- वर्षा आधारित और कम उपजाऊ खेत में सीधा बीज बोना ज्यादा उचित रहेगा।
- अच्छी बारिश होने पर 2–3 बार जोतकर गोबर खाद मिट्टी में मिला लें।
- मिट्टी को भुरभुरी कर समतल बना लें।
- 10–10 इंच दूरी में खाद डालकर निशान बना लें।
- उपचारित बीज भिगोकर 2–2 बीज निशान में बोएं।
- बीज आधा इंच गहराई पर बोएं।
- 8–10 कतार के बाद पानी निकासी के लिए नाली की जगह छोड़े।
- 10–15 दिन में बीज उगने के साथ–साथ खरपतवार खुरपी से निकाल दें।
- बारिश की कमी है तो दुबारा इसी तरह निंदाई करें।
- पानी भरा होने पर वीडर चलाकर निंदाई–गुडाई करें।
- दो–तीन दिन से ज्यादा पानी भरा रहने पर निकासी करें।
- कम अवधि और सूखारोधी किस्मों का ही प्रयोग करें।

जनहित में प्रकाशित : जन स्वास्थ्य सहयोग, ग्राम : गनियारी - बेलटुकरी, जिला - बिलासपुर, छत्तीसगढ़ पिन न. 495 112, फोन न. 07753-244819